गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा, तृतीय वर्ष कला
हिन्दी साहित्य के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तक

# निबन्ध स्तबक

313

सम्पादक

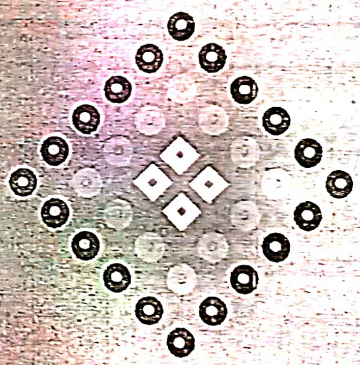

डॉ. मनोज पंड्या • डॉ. नवीन नन्दवाना • डॉ. नरेन्द्र पानेरी

निबन्ध स्तबक

निबन्ध

₹125

# निबन्ध स्तबक

[गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा, तृतीय वर्ष कला
हिन्दी साहित्य : द्वितीय प्रश्न पत्र]

सम्पादक

**डॉ. मनोज पंड्या**
सह-आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री गोविन्द गुरु राज. महाविद्यालय, बाँसवाड़ा

**डॉ. नवीन नन्दवाना**
सह-आचार्य, हिन्दी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

**डॉ. नरेन्द्र पानेरी**
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री गोविन्द गुरु राज. महाविद्यालय, बाँसवाड़ा

३१५

लोकभारती प्रकाशन

**लोकभारती प्रकाशन**
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग
प्रयागराज-211 001
वेबसाइट : www.lokbhartiprakashan.com
ईमेल : info@lokbhartiprakashan.com
**शाखाएँ :** 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने
पटना-800 006
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

**पहला संस्करण :** 2021 **मूल्य :** ₹125

**बी.के. ऑफसेट**
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032
द्वारा मुद्रित

NIBANDH STABAKA
*Edited by* Dr. Manoj Pandya,
Dr. Navin Nandwana, Dr. Narendra Paneri

ISBN : 978-93-92186-95-0

## क्रम

*भूमिका* 7

**भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** 21
भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है 24
**आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी** 30
रामायण 36
**सरदार पूर्णसिंह 'अध्यापक'** 40
मजदूरी और प्रेम 43
**प्रेमचन्द** 49
साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता) 54
**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** 62
श्रद्धा और भक्ति 66
**महादेवी वर्मा** 85
हमारा देश और राष्ट्रभाषा 88
**आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** 95
भारतीय साहित्य की प्राण-शक्ति 100
**नन्ददुलारे वाजपेयी** 111
भारतीय साहित्य की एकता 114

**रामविलास शर्मा** 119
तुलसी के सामाजिक मूल्य 126
**विद्यानिवास मिश्र** 133
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है 138
**कुबेरनाथ राय** 144
हरी-हरी दूब और लाचार क्रोध 148
**हरिशंकर परसाई** 154
चमचे की दिल्ली-यात्रा 157

# भूमिका

हिन्दी गद्य की विविध विधाओं में निबन्ध भी एक चर्चित विधा है। इस विधा में रचनाकार अपने मन की विविध अनुभूतियों और विचारों को एक सूत्र में इस प्रकार पिरोता है कि सम्पूर्ण रचना एक सूत्र में बँधी प्रतीत होती है और किसी विषय पर स्पष्ट रूप से विचाराभिव्यक्ति करती है। निबन्ध शब्द नि+बन्ध से मिलकर बना है। इसका अर्थ होता है—बाँधना।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के कोश के अनुसार—"संस्कृत में निबन्ध का समानार्थी किन्तु अधिक व्यापक शब्द प्रबन्ध है, जिसका मूल अर्थ (प्र+बन्ध {बाँधना}+अच्) सन्दर्भ या ग्रंथ रचना है। आधार (कथा विषय) पर कल्पना से परम्परानुमोदन के साथ किसी विषय या कथा का गद्य या पद्य में प्रस्तुतीकरण प्रबन्ध कहलाता था। धीरे-धीरे यह शब्द आख्यान या कथा के सम्यक तारतम्य पर आधारित केवल काव्य के लिए प्रयुक्त होने लगा और प्रबन्ध काव्यों के लिए रूढ़ हो गया।"

निबन्ध शब्द की व्युत्पत्ति देखें तो पाते हैं कि इस शब्द का प्रयोग आरम्भ में किसी वस्तु को बाँधने, गूँथने या रोकने के अर्थ में होता था। आरम्भ में जब लेखन के लिए ताड़पत्र या भोजपत्रों का उपयोग होता था, तब लेखकगण उन्हें बाँधकर या गूँथकर सुरक्षित रखते थे। कालान्तर में विशेष प्रकार के बँधे या गूँथे हुए भावों से युक्त रचना 'निबन्ध' कहलाने लगी।

कई विद्वान फ्रांसिस लेखक 'मोनटेन' को निबन्ध का प्रवर्तक मानते हैं। इन्होंने निबन्ध के लिए 'एसे' शब्द का प्रयोग किया है।

## निबन्ध की परिभाषाएँ

निबन्ध को विभिन्न विद्वानों ने इस प्रकार परिभाषित किया है—

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है, "यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों में ही सबसे अधिक सम्भव होता है। इसलिए गद्य शैली के विवेचक उदाहरणों के लिए अधिकतर निबन्ध ही चुना करते हैं। निबन्ध या गद्य विधान कई प्रकार के हो सकते हैं—विचारात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक।" उनके अनुसार—"आधुनिक पाश्चात्य